डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, आमोस: सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा? सत्र 2(बी): एक भविष्यवक्ता अपने श्रोताओं को फँसाता है
(आमोस 1:1-2:16)

डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म आमोस की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए कहते हैं: आमोस, सिंह दहाड़ा है, कौन न डरेगा? सत्र 2 (ख) एक भविष्यवक्ता अपने श्रोताओं को अपने जाल में फँसाता है (आमोस 1:1-2:16)।

इससे पहले कि हम इज़राइल के विरुद्ध भविष्यवाणी में उतरें, जो इस खंड का चरमोत्कर्ष है, यह आठवाँ भविष्यवाणी है और यह प्राथमिक लक्ष्य समूह है, मुझे लगता है कि हमें रुकना चाहिए और उस सिद्धांत का सारांश देना चाहिए जो हमने इससे पहले की भविष्यवाणी में देखा है, क्योंकि भले ही इज़राइल परमेश्वर का प्राथमिक केंद्र है, फिर भी इन अन्य भविष्यवाणीयों को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। प्रभु इस पूरे क्षेत्र पर, इन सभी राष्ट्रों सहित, न्याय करने जा रहे हैं, भले ही इज़राइल उनका लक्ष्य है, फिर भी उन्हें उनके द्वारा निर्धारित सिद्धांतों का उल्लंघन करने के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा। और इसलिए, मुझे लगता है कि मैंने एक वाक्य में, इस पहले खंड, अध्याय 1, 3 से 2, 5 के सर्वोपरि सिद्धांत को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, और मैंने इसे इस प्रकार लिखा है: जब राष्ट्र नैतिकता और आचार के उनके सार्वभौमिक मानकों का उल्लंघन करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें जवाबदेह ठहराता है।

और फिर, मैं तर्क दे रहा हूँ कि यह नूह की वाचा से जुड़ा है, और परमेश्वर द्वारा रचित और स्थापित मानव समाज पर शासन करने वाला मूल सिद्धांत यह है कि हमें यह समझना चाहिए कि हम परमेश्वर की छवि में हैं, हममें उनकी छवि है, और हमें अपने साथी मनुष्यों में उस छवि का सम्मान करना चाहिए। और जब हम ऐसा नहीं करते, तो हम अंततः सृष्टिकर्ता के प्रति अनादर प्रदर्शित करते हैं। इसलिए, जब राष्ट्र उसकी नैतिकता और आचार के सार्वभौमिक मानकों का उल्लंघन करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें उत्तरदायी ठहराता है।

और फिर हम इसे इस तरह से थोड़ा और विस्तार से समझ सकते हैं। परमेश्वर ने नूह और उसके वंशजों को निर्देश दिया कि वे फलवन्त हों, गुणा करें और उसकी ओर से शासन करें। उसने मनुष्यों को एक-दूसरे की हत्या करने से मना किया, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वरीय छवि निहित है।

चूँकि आमोस के समय के राष्ट्रों ने नूह को दिए गए आदेश का, सिद्धांततः, उल्लंघन किया था, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया और घोषणा की कि वह उनके अनुसार उनका न्याय करेगा। और मुझे लगता है कि यह आज भी लागू होता है। परमेश्वर राष्ट्रों पर नज़र रख रहा है, और जब राष्ट्र इस मूल सिद्धांत का उल्लंघन करते हैं, तो वह उन्हें जवाबदेह ठहराएगा, और आप इसे इतिहास में देख सकते हैं।

परमेश्वर ने उन राष्ट्रों का न्याय किया है जिन्होंने वही काम किए हैं जो ये राष्ट्र कर रहे थे। द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी के लिए हालात अच्छे नहीं रहे, क्योंकि हिटलर और नाज़ियों ने जो किया था, उसके कारण जर्मन लोगों को बहुत कष्ट सहना पड़ा। और यह परमेश्वर का न्याय था, जो अक्सर सामूहिक होता है।

यह व्यक्ति से परे है, और यह बड़े जनसमूहों से संबंधित है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो हम इसमें देखते हैं, जो इस खंड से उभरता है। लेकिन अब हम इज़राइल के विरुद्ध दैवीय घटना की ओर बढ़ना चाहते हैं, जहाँ यह सब हो रहा है।

और यहीं पर अमोस उन्हें फँसाने वाला है। उसने उन्हें फँसाया है। मुझे लगता है कि इस समय वे उसकी बातों को बहुत सकारात्मक नज़रिए से देख रहे हैं।

वे शायद उसे पसंद करते हैं। वह हमारे लिए उद्धार और प्रकाश का पैगम्बर है, और अब, हाँ, उसने परमेश्वर के मुख्य लक्ष्य के गले में फंदा डाल दिया है, और वह उसे खींच लेगा। और इसलिए, आइए आमोस 2:6 से शुरू करते हुए पढ़ते हैं, प्रभु यही कहते हैं, इस्राएल के तीन पापों के लिए, यहाँ तक कि चार पापों के लिए भी, मैं नरम नहीं पड़ूँगा।

वाह! और जब हम इस सूची को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि हमारे पास कम से कम चार लोग हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कैसे गिनते हैं। वे निर्दोषों को चाँदी के लिए और ज़रूरतमंदों को एक जोड़ी चप्पलों के लिए बेच देते हैं।

यह शायद कर्ज़ के लिए लोगों को बेचने की बात कर रहा है, कर्ज़दारों की। वे गरीबों के सिरों को ज़मीन की धूल के समान रौंदते हैं, और उत्पीड़ितों को न्याय से वंचित करते हैं। मुझे लगता है कि आप पद 6 के उत्तरार्ध और पद 7 के पूर्वार्ध को मूलतः अन्याय के रूप में देख सकते हैं।

वे लोगों के साथ बुरा व्यवहार कर रहे हैं। इस नौकरशाही में उनके पास आर्थिक और कानूनी ताकत है, और मुझे लगता है कि हमें एक पल रुककर इसकी पृष्ठभूमि पर बात करनी चाहिए, उत्तरी राज्य में क्या हुआ है। और इसके लिए हमें 1 शमूएल 8 तक जाना होगा ।

याद है जब इस्राएल ने 1 शमूएल 8 में सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा की माँग की थी? इससे शमूएल बहुत परेशान हुआ, क्योंकि उसे लगा कि उसे अस्वीकार किया जा रहा है। वह भविष्यवक्ता है, और वह प्रभु का प्रमुख साधन है, और अब लोग इससे संतुष्ट नहीं हैं। दरअसल, वे उससे कहते हैं, तुम्हारे बच्चे, जो तुम्हारी जगह लेने वाले हैं, तुम्हारे बेटे, तुम्हारी तरह न्याय का प्रचार नहीं कर रहे हैं।

उन्हें असल में इस बात की चिंता है कि अम्मोनी उन्हें धमका रहे हैं, और वे ऐसा नहीं करते, वे नागरिक- सैनिकों से निपट चुके हैं । वे एक राजा के नेतृत्व में एक स्थायी सेना चाहते हैं, और इसलिए वे भी राष्ट्रों की तरह एक राजा चाहते हैं, और उन राजाओं के पास घोड़े और रथ होते हैं, और उनके पास एक सेना होती है, एक स्थायी सेना। यही वे चाहते हैं।

और प्रभु कहते हैं, उन्हें वह दो जो वे चाहते हैं, हालाँकि अध्याय 9 में वे इससे थोड़ा पीछे हटते हैं। लेकिन वे कहते हैं, उन्हें वह दो जो वे चाहते हैं, लेकिन ऐसा करने से पहले, तुम्हें उन्हें चेतावनी देनी होगी कि वे क्या कर रहे हैं। और अगर आप पहला शमूएल 8 पढ़ें, तो आपको प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया के, और खासकर प्राचीन निकट पूर्व के इस क्षेत्र के विशिष्ट राजाओं का वर्णन मिलता है। वे एक विशाल शाही नौकरशाही स्थापित करने जा रहे हैं।

शाही दरबार, महल और राजा का भरण-पोषण करने के लिए बड़ी संख्या में लोगों की ज़रूरत होगी । इसलिए, वह आपकी फ़सलें ले जाएगा।

वह आपकी फ़सल का एक हिस्सा ले लेगा। वह आपके बच्चों को ले जाएगा, और उन्हें ज़बरदस्ती भर्ती करेगा, उन्हें सेना में भर्ती करेगा, और उन्हें सेना में लड़ना होगा। उन्हें राजा के लिए ज़रूरी दूसरे काम करने होंगे।

वह तुम्हारी बेटियों को ले जाएगा, और अंततः तुम उस राजा को श्राप दोगे जिसे तुम इतनी शिद्दत से चाहती थी। और यही बात राजाओं की पुस्तक पढ़ते समय सामने आती है। हम इसकी शुरुआत सुलैमान से देखते हैं।

मेरा मतलब है, निश्चित रूप से, उनके पास एक विशाल नौकरशाही थी, और इसमें जो होता है वह यह है कि शाही नौकरशाही सब कुछ निगल जाती है । प्राचीन इज़राइल एक पूँजीवादी समाज नहीं था, बल्कि मुख्यतः कृषि प्रधान समाज था, और शाही नौकरशाही उस पर कब्ज़ा करने वाली थी। उनके पास कानूनी शक्ति होगी, और वे ऐसे हालात पैदा करेंगे जहाँ लोगों को कर, कर्ज़ या कर्ज़ के कारण अपनी ज़मीन गँवानी पड़ेगी ।

वे लोगों को कुछ उधार दे सकते हैं, और वास्तव में उनसे पैसे ऐंठ रहे हैं, ऊँची ब्याज दरों पर, और इसी तरह की अन्य चीज़ें। यह सब इस्राएल और यहूदा के इतिहास के खुलने के साथ हो रहा है, और यही यहाँ की पृष्ठभूमि है। हमारे यहाँ एक विशाल शाही नौकरशाही है जो ईश्वर की मंशा से कहीं ज़्यादा फैली हुई है, और इसलिए वे निर्दोषों को चाँदी के लिए और ज़रूरतमंदों को एक जोड़ी चप्पलों के लिए बेच रहे हैं।

उन्होंने अदालतों में इस तरह से हेराफेरी की है कि उनकी नज़र में ये लोग दोषी हैं, जबकि वे हैं नहीं। वे अन्याय के शिकार हैं, और वे गरीबों के सिर को ज़मीन की धूल की तरह रौंदते हैं और उत्पीड़ितों को न्याय से वंचित करते हैं, और अक्सर ऐसा होता है कि जिन लोगों के पास अपनी ज़मीन, खेत या कुछ भी, पशुधन होता है, वे सब कुछ खो देते हैं। राजशाही उस पर कब्ज़ा कर लेती है।

राजा को अपने सैनिकों के लिए ज़मीन चाहिए। उसे अपने सैनिकों को इनाम देना होता है, और वे वह सब छीन लेते हैं, और इस तरह समाज में एक भूमिहीन समूह बनता है जो दिहाड़ी मज़दूर बन जाता है। उन पर अत्याचार होते हैं, और बेशक प्रभु ने इस्राएल से कहा था, ज़मीन मेरी है, और याद रखना कि प्रभु ने ज़मीन हर गोत्र को बाँट दी है, और वह उम्मीद करता है कि सबको एक जैसी ज़मीन न मिले। यह अवास्तविक है।

यह एक खास देश है, इज़राइल। कुछ इलाके दूसरों से ज़्यादा उपजाऊ हैं, लेकिन हर किसी के पास अपनी जीवनशैली और एक हद तक आज़ादी और स्वायत्तता बनाए रखने के लिए पर्याप्त ज़मीन होनी चाहिए, और इसलिए उत्तरी राज्य में यह पूरी तरह से टूट गया है, और क्या आपको नाबोत और उसकी दाख की बारी याद है? राजाओं में एक अच्छी कहानी है जो इसे दर्शाती है। राजा अहाब नाबोत की दाख की बारी चाहता है।

वह रो रहा है क्योंकि उसे यह नहीं मिल सकता, और ईज़ेबेल कहती है, " अरे, तुम तो राजा हो। वह जानती है कि सभी राष्ट्रों के राजा कैसे होते हैं।" वह फ़ीनीशिया से आती है, और कहती है, " अरे , तुम यह पा सकते हो," और इसलिए यह कंगारू अदालत का मामला बन जाता है, और झूठे आरोपों में नाबोत की संपत्ति उससे छीन ली जाती है, और अब यह राजा के पास है।

प्रभु को यह पसंद नहीं आता, और प्रभु उसे यह बताने के लिए नबी भेजते हैं कि तुम्हें अपने किए की सज़ा मिलेगी। यह उत्तरी राज्य में हो रही घटनाओं का एक उदाहरण है, यहाँ अन्याय एक अपराध है, और फिर पद 7 के दूसरे भाग में, पिता और पुत्र एक ही लड़की का इस्तेमाल करते हैं, और इस तरह मेरे पवित्र नाम को अपवित्र करते हैं, और यह अच्छा नहीं लगता। इब्रानी में कहा गया है कि वे एक ही लड़की के पास जाते हैं, और परिणामस्वरूप मेरे पवित्र नाम को अपवित्र करते हैं, इसलिए इसे अक्सर यौन संबंध के रूप में समझा जाता है, इसलिए एक पिता और एक पुत्र दोनों एक ही लड़की या युवती के साथ यौन संबंध रखते हैं, और कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि, यह गरीब वर्ग का कोई व्यक्ति होगा। वे बस उनका शोषण कर रहे हैं, उनका फायदा उठा रहे हैं।

दूसरों ने कहा है, हो सकता है कि यह कोई पंथ-वेश्या हो। हम यहाँ मूर्तिपूजा की बात कर रहे हैं, जो उत्तरी राज्य में बाल पूजा के रूप में प्रचलित थी, और इसलिए वे जा रहे हैं। वे एक समन्वयवादी धर्म के तहत संबंध बना रहे हैं, आप जानते हैं, वे भगवान के साथ बाल की भी पूजा कर रहे हैं, क्योंकि जब आप इसे अंग्रेज़ी में देखते हैं, तो वे स्त्री के पास जाते हैं। हिब्रू में एक मुहावरा है, 'स्त्री के पास जाओ', और यह यौन संपर्क के लिए एक व्यंजना है, लेकिन यह वही क्रिया नहीं है।

यह बो है , उस स्थिति में, क्रिया बो । यह क्रिया हलाक है , और हलाक का प्रयोग कभी भी यौन अर्थ में पूर्वसर्ग के साथ नहीं किया जाता है, इसलिए कुछ लोग इसकी व्याख्या यौन प्रकृति के रूप में करेंगे, जबकि अन्य इसका विरोध करेंगे, और एक व्याख्या जो हाल ही में सामने आई है , वह यह है कि यह किसी अलग चीज़ के बारे में बात कर रहा है। यह एक मूर्तिपूजक प्रकार के भोज के बारे में बात कर रहा है जिसे मार्ज़ेच के नाम से जाना जाता था , और यह इज़राइल में जाना जाता है, वास्तव में, आमोस 6 में, आमोस इसे नाम से संदर्भित करता है, इसलिए वह मार्ज़ेच से परिचित है, और हम इसे प्राचीन निकट पूर्व के आसपास देखते हैं, इसलिए यह एक सामाजिक क्लब की तरह है जहाँ पिता और पुत्र जाते थे, और वे वहाँ क्या करते थे, वे पीते थे, वे मौज-मस्ती करते थे, और वे यहाँ तक कि, पूर्वजों, मृतकों की पूजा भी कर सकते हैं, आप जानते हैं, आप मृतकों के संपर्क में आने की कोशिश कर रहे हैं, आप जानते हैं, एंडोर प्रकार की चुड़ैल, और इसलिए यह एक सामाजिक क्लब की तरह है जो मूर्तिपूजक है।

आपका आधार, और इस विचार को बढ़ावा देने वाले विद्वानों में से एक, का कहना है कि यहाँ जिस लड़की का ज़िक्र किया गया है, वह कोई वेश्या नहीं, बल्कि एक परिचारिका है। मार्ज़ेच में एक परिचारिका होती है। एक महिला आपका स्वागत करती है और आपको आमंत्रित करती है, जो एक परिचारिका करती है, और इसलिए यह उसी लड़की के साथ यौन संपर्क की बात नहीं कर रहा है, जो बहुत बुरा होगा, बल्कि यह इस बात की बात कर रहा है कि वे उसी लड़की के पास जा रहे हैं, लड़की मार्ज़ेच भोज के लिए खड़ी है।

यह एक तरह का लक्षणालंकार या उपमा है। वह वही है जो वहाँ आपका स्वागत करेगी, और चूँकि यह मूर्तिपूजा है, इसलिए यह प्रभु के पवित्र नाम का अपमान होगा। बहरहाल, चाहे आप इसे यौन संबंध के रूप में देखें या सिर्फ़ मुख्यतः मूर्तिपूजा के रूप में, यह ग़लत है, यह प्रभु के विरुद्ध किया गया एक अपराध है, और इसलिए अध्याय 2 पद 8 में, वे हर वेदी के पास गिरवी रखे वस्त्रों पर लेट जाते हैं।

उनके ईश्वर के घर में, आप वास्तव में इसका अनुवाद देवताओं के रूप में कर सकते हैं, क्योंकि यह हिब्रू में एलोहीम है, जो एक बहुवचन रूप है, अक्सर एक सच्चे ईश्वर को संदर्भित करता है। फिर भी, इस तरह के संदर्भ में जहाँ हम जानते हैं कि मूर्तिपूजा हो रही है, उनके एक से अधिक ईश्वर हो सकते हैं। निश्चित रूप से, बाल उन देवताओं में से एक होगा, लेकिन एक बार जब आप वहां बहुदेववादी बन जाते हैं, तो आपको विभिन्न देवताओं को खुश रखना होगा ताकि यह उनके देवताओं के घर में हो सके, वे जुर्माने के रूप में ली गई शराब पीते हैं। तो वे जो कर रहे हैं, वे किसी प्रकार की पूजा में संलग्न हैं, शायद मार्ज़ेक के साथ मिलकर , वे किसी प्रकार की पूजा में संलग्न हैं।

अगर यह एकमात्र सच्चे ईश्वर की पूजा है, और हम उनके ईश्वर का अनुवाद एनआईवी की तरह करते हैं, जो पूरी तरह से संभव है, तो यह किसी प्रकार का समन्वयवाद है जो चल रहा है। वे मूर्तिपूजक प्रथाओं का उपयोग कर रहे हैं, यह एक प्रकार का पाखंड है, लेकिन अगर यह उनके ईश्वर हैं, तो हमारे यहाँ पूर्ण मूर्तिपूजा है, और हमारे यहाँ यह भी है कि वे इन मंदिरों में इन वेदियों के पास लेटे रहते हैं, और वे उन वस्त्रों पर लेटे रहते हैं जो उन्होंने गरीबों से गिरवी रखे हैं। दूसरे शब्दों में, ठीक है, आप हमें गिरवी रखने जा रहे हैं, यह आपका वस्त्र होगा।

खैर, गरीब लोग कर नहीं चुका सकते, इसलिए कपड़ा ले लिया जाता है, और पुराने नियम के नियम कहते हैं कि उस कपड़े को रात भर अपने पास मत रखना। हमारे पास असल में एक ग्रंथ है जो, मुझे लगता है, यहूदा से आया है, यवनेह योमेलेत , या यह बाद के काल का हो सकता है, लेकिन एक आदमी शिकायत कर रहा है कि इस आदमी ने मेरा कपड़ा रख लिया है, और वह उसे वापस नहीं कर रहा है, और मुझे इसकी ज़रूरत है। तो, इस तरह की घटना हुई, और फिर वे जुर्माने के तौर पर ली गई शराब भी पीते हैं, तो ज़ाहिर है कि उन्होंने लोगों से शराब भी चुराई होगी।

तो, इस मामले में आपके सामने जो है, वह यह है कि वे अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, या तो यह किसी प्रकार का समन्वयवाद है, या पाखंड, या मूर्तिपूजा। वे एकमात्र सच्चे परमेश्वर, यहोवा, के प्रति सच्चे नहीं हैं, और उनका अन्याय इसी से जुड़ा है। आपके सामने दोनों ही हैं।

आप जानते हैं, भविष्यवक्ता अक्सर मूर्तिपूजा और अन्याय की बात करते हैं, जिसे हम अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम न करने और अपने पड़ोसी से वैसा प्रेम न करने के रूप में समझ सकते हैं जैसा आपको करना चाहिए। एक ऊर्ध्वाधर और एक क्षैतिज आयाम है, और हो सकता है कि इस पद में दोनों का मिलन हो । तो, अगर आप गिनती कर रहे हैं, तो यह तीसरा है।

उन्होंने, आप जानते हैं, ज़रूरतमंदों और मासूमों का शोषण किया है, गरीबों के सिर कुचले हैं, बाप और बेटा एक ही लड़की के पास जा रहे हैं, चाहे इसका मतलब कुछ भी हो। वे ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल करके पूजा कर रहे हैं जो उनके अन्याय का सबूत हैं। तो, यह कैसी पूजा होगी? परमेश्वर ऐसी पूजा को अस्वीकार कर देगा।

और फिर प्रभु थोड़ा आगे बढ़ते हैं, चौथे पाप पर जाने से पहले, प्रभु उनके लिए इतिहास की समीक्षा करने वाले हैं। तुम जानते हो, तुमने मेरे विरुद्ध विद्रोह किया है, लेकिन चलो पीछे चलते हैं और याद करते हैं कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया। फिर भी मैंने उनसे पहले एमोरियों का नाश किया था।

एमोरी और कनानी शब्द कभी-कभी एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किए जाते हैं। दरअसल, एक दूसरे का ही एक हिस्सा है, लेकिन इन्हें एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जा सकता है। मैंने उनसे पहले एमोरियों, यानी कनानी लोगों को, नष्ट कर दिया था।

वह विजय की बात कर रहा है, और प्रभु की भागीदारी के बिना वे उस देश पर विजय प्राप्त नहीं कर पाते। मेरा मतलब है, याद करो उसने यरीहो में क्या किया था, और तुम जानते हो, उस दिन जब यहोशू युद्ध कर रहा था, और उसने दुश्मन पर ओले बरसाए थे। वह अलौकिक था।

एक अलौकिक आयाम है। मैंने उनके सामने एमोरियों को नष्ट कर दिया, हालाँकि वे देवदारों जितने ऊँचे और बलूत जैसे मज़बूत थे। याद है जब जासूस वापस आए थे, ओह, हमने वहाँ अनाकियों को देखा था , नेफिलिम के बेटे।

हमने उन्हें वहाँ देखा है। वे बहुत बड़े हैं। हम उन्हें हरा नहीं सकते।

यहोशू और कालेब ने कहा, " हाँ , हम जा सकते हैं।" यहोवा कहता है, "यहोशू और कालेब, उस देश में जाओ।" तुम लोग नहीं जा सकते।

तुम्हारे बच्चे तो ऐसा करेंगे, पर तुम नहीं। और इसलिए, वे ऊँचे और महान योद्धा थे। मैंने ऊपर से उनके फल और नीचे से उनकी जड़ें नष्ट कर दीं।

यहोवा उनकी तुलना पेड़ों से करता है, और फिर कहता है, " मैंने उन्हें नष्ट कर दिया ... मैं तुम्हें मिस्र से बाहर लाया।" वह थोड़ा और पीछे जाता है।

यहाँ इतिहास कुछ उल्टा सा है। हम विजय से शुरू करते हैं, और फिर पीछे लौटते हैं। मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया और तुम्हें एमोरियों का देश देने के लिए 40 साल तक जंगल में ले गया।

मैं तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। वह उनके पाप का ज़िक्र नहीं करता, लेकिन उन्होंने पाप किया था, और इसीलिए उन्हें 40 साल तक भटकना पड़ा, लेकिन प्रभु ने उनकी देखभाल की क्योंकि उसने अपनी योजना नहीं छोड़ी थी। मैं तुम्हें मिस्र से छुड़ाऊँगा और तुम्हें एक देश दूँगा, और यही बात वह यहाँ याद दिला रहा है।

उसने उन्हें आध्यात्मिक नेतृत्व भी प्रदान किया। मैंने तुम्हारे बच्चों में से भविष्यद्वक्ता भी उत्पन्न किए, तुम्हारे युवाओं में से शमूएल और नाज़ीर जैसे लोगों को, और याद रखो, एक नाज़ीर वह होता है जो प्रभु के प्रति समर्पित होता है, जैसे शिमशोन था, और प्रभु के प्रति उसका समर्पण इस बात से प्रदर्शित होता है कि वह शराब नहीं पीता और अपने बाल नहीं कटवाता, और क्या यह सच नहीं है, इस्राएल के लोगों, प्रभु की यही वाणी है। लेकिन देखो, उन्होंने क्या किया।

तूने नाज़रियों को दाखमधु पिलाया और नबियों को भविष्यवाणी न करने की आज्ञा दी । अब, हमें पूरी कहानी तो नहीं पता, लेकिन वे अपने आध्यात्मिक अगुवों का आदर नहीं कर रहे थे। दरअसल, वे अपने आध्यात्मिक अगुवों को अपनी मन्नतें तोड़ने के लिए उकसा रहे थे।

वे प्रभु के प्रति समर्पण का अवमूल्यन कर रहे थे। तो, उन्होंने उन्हें किस तरह से दाखमधु पिलाया, मुझे संदेह है कि उन्होंने वास्तव में उन्हें वहाँ बुलाया और दाखमधु पिलाया, लेकिन उनका रवैया नाज़रियों को उनके द्वारा किए गए समर्पण के अनुकूल नहीं था, और उन्होंने भविष्यवक्ताओं से कहा, चुप रहो, भविष्यवाणी मत करो, और पुराने नियम में भी इसके संदर्भ मिलते हैं। तो, मूल रूप से, यही आपका चौथा अपराध है।

हमारे पास चार हैं, और अगर आप हर बार जब कुछ कहा जाए तो उसे गिनने का फैसला करें, जैसे कि आप उनमें से चार निकाल सकते हैं, तो यहाँ भी अगर आप इसी गिनती के तरीके से गिनती करें तो आपको नौ या दस मिलेंगे। तो अब हम वापस आकर सोच सकते हैं कि पैगंबर ने बाकी सूचियाँ छोटी क्यों छोड़ दीं। वह उन राष्ट्रों और इस राष्ट्र के बीच एक अंतर स्थापित कर रहे थे, और अध्याय 3 की शुरुआत में जो कहने वाले हैं, उसकी नींव रख रहे थे, यानी, "मुझे तुमसे ज़्यादा की उम्मीद थी।"

जिसे जितना दिया जाता है, उससे उतना ही अपेक्षित होता है, और मैं इन्हीं बातों के लिए आपकी आलोचना करने जा रहा हूँ, क्योंकि जब आप सूची पढ़ेंगे, तो आपके मन में यह कहने का मन करेगा कि यह बुरा है, लेकिन यह गर्भवती महिलाओं का शोषण नहीं है। जब हम इस खंड के सिद्धांत पर पहुँचेंगे, तो हम इस पर चर्चा करेंगे। तो यही आरोप है।

आप जानते हैं, न्याय-भाषणों में एक अभियोग लगाया जाता है जहाँ प्रभु अभिभाषक, किसी व्यक्ति या राष्ट्र को बता रहे होते हैं कि उन्हें दण्ड क्यों दिया जाएगा। आपको दण्ड क्यों दिया जाएगा, यह रहा। यह एक गलत काम का आरोप है।

मैं तुम्हें इसी वजह से सज़ा दूँगा। और फिर तुम्हें सज़ा सुनाई जाएगी। तो, औपचारिक घोषणा हो गई।

यही कारण है कि आपका न्याय किया जाएगा, और यह न्याय कैसा होगा। और अक्सर ऐसा होता है कि मैं इन परिणामों में हस्तक्षेप करूँगा। उदाहरण के लिए, फ़ोरम क्रिटिक्स नामक विद्वानों के एक समूह, क्लॉस वेस्टरमैन ने पुराने नियम में दिखाई देने वाली भविष्यवाणी संबंधी भाषण शैलियों का अध्ययन किया है, और वे न्याय संबंधी भाषण के बारे में बात करेंगे।

तो, आरोप, घोषणा, और घोषणा के भीतर , प्रभु अपने हस्तक्षेप की घोषणा करते हैं और फिर उस हस्तक्षेप के परिणामों का भी वर्णन करते हैं। और यही हम यहाँ देख रहे हैं। पद 13 का अनुवाद कैसे किया जाए, इस पर कुछ बहस हुई है, लेकिन एनआईवी ने इसे इस प्रकार बनाने का निर्णय लिया है, "अब तो, मैं तुम्हें कुचल दूँगा।"

और मुझे लगता है कि यह एक उचित अनुवाद है। मैं तुम्हारे नीचे के क्षेत्र को कुचल दूँगा, यानी मैं तुम्हें कुचल दूँगा। जैसे अनाज से लदी गाड़ी कुचल जाती है।

उसे यहाँ खेती-बाड़ी से जुड़ी तस्वीरें पसंद हैं । खलिहान, वगैरह। तो, हम अनाज से लदी एक गाड़ी की कल्पना कर रहे हैं।

खलिहान की कटाई हो चुकी है, और अब हम शायद अनाज को बाहर निकाल रहे हैं, या शायद उसे खलिहान में ला रहे हैं। खैर, प्रभु कुचलने ही वाले हैं, और वह उन्हें एक शब्द-चित्र देते हैं। अगर आपने कभी कोई भरी हुई गाड़ी देखी है, तो आप अपने बच्चों से कहते हैं, उस गाड़ी के रास्ते से दूर रहो, क्योंकि वह तुम्हें कुचल देगी।

खैर, प्रभु उन्हें कुचलने वाले हैं। वह उन्हें कुचलने वाले हैं। और इसीलिए प्रभु कहते हैं, "अनोखी, हिब्रू में, अब मैं, मैं यह करने वाला हूँ।"

और फिर, अध्याय 14 से 16 में , वह बताता है कि इससे क्या होगा, और वे अपनी रक्षा के लिए अपनी सेना पर निर्भर रहेंगे। इसीलिए आपके पास एक राजा है, इसीलिए आपके पास एक बड़ा राज दरबार है, और हमारे पास ये सभी सैनिक हैं जिन्हें राजा ज़मीन देता है, और इन सब को चलाने के लिए, उसे आम जनता से चीज़ें लेनी पड़ती हैं । और इसलिए वे अपनी सेना पर निर्भर रहेंगे , लेकिन ध्यान दें कि सेना का क्या होगा।

यहाँ विचार यह है कि तेज़ दौड़ने वाला भाग नहीं पाएगा। तेज़ दौड़ने वाला भाग नहीं पाएगा। बलवान अपनी शक्ति नहीं जुटा पाएगा, और योद्धा अपनी जान नहीं बचा पाएगा।

श्लोक 15, हम आगे बढ़ते हैं, धनुर्धर अपनी जगह पर खड़ा नहीं रहेगा। इन सेनाओं में पैदल सेना होगी, घोड़े और रथ होंगे, धनुर्धर और धनुर्धर भी होंगे, और असीरियन कला में हम धनुर्धरों को देखते हैं। धनुर्धर अपनी जगह पर खड़ा नहीं रहेगा।

तेज़ रफ़्तार सिपाही बच नहीं पाएगा, और घुड़सवार अपनी जान नहीं बचा पाएगा। और फिर पद 16 में, उस दिन सबसे बहादुर योद्धा भी नंगे भाग जाएँगे, यहोवा की यही वाणी है । यहाँ एक हद तक घबराहट ज़रूर होगी जब आप अपने कपड़े उतारने लगेंगे, शायद और तेज़ी से भागने के लिए।

और इसलिए, अगर हम इन्हें जोड़ दें तो यह दिलचस्प होगा। आमोस को संख्याएँ पसंद हैं, आप जानते हैं, उसने 7-8 को भविष्यवाणियों के साथ किया, और उसने 3-4 को भी किया, और इसका एक मज़ेदार इस्तेमाल, जहाँ उसने सूची को तब तक नहीं भरा, जैसा कि आप उम्मीद कर सकते हैं, जब तक कि वह लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाता, यह दर्शाने के लिए कि प्रभु इन सभी पापों को सूचीबद्ध नहीं कर सकते, हमें प्राथमिक लक्ष्य की ओर बढ़ना होगा। और अब, उन्हें गिनें।

श्लोक 14 में तीन कथन हैं, श्लोक 15 में भी तीन, और फिर श्लोक 16 में, उस दिन सबसे बहादुर योद्धा भी नंगे भाग जाएँगे। और इस तरह कुल सात हुए। न्याय के परिणामों का वर्णन करते हुए, वह इसे सात अलग-अलग तरीकों से वर्णित करता है, और इस संस्कृति, इसके साहित्यिक उपकरणों और मुहावरों से परिचित कोई भी व्यक्ति समझ जाएगा कि यह एक पूरी सूची है।

यह पूर्ण विनाश है। इसमें कुछ समानताएँ हैं, लेकिन वह सैन्य पराजय का वर्णन कर रहे हैं, और वह इसे सात गुना विस्तार से बता रहे हैं, जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह पूर्ण पराजय होगी। यहाँ पूर्ण विनाश होने वाला है।

तो उसने अपने श्रोताओं को फँसा लिया है, और इस्राएल इसका मुख्य निशाना है। अध्याय 3 में जाने से पहले, जहाँ प्रभु हमें इस पर कुछ दृष्टिकोण देते हैं, पहले कुछ पदों में, मैं अपने सिद्धांतों पर वापस जाना चाहता हूँ। और यहाँ अध्याय 2, पद 6 से 16 में हम जो देखते हैं, वह यह है कि परमेश्वर अपने लोगों पर एक उच्च नैतिक मानक रखता है, जिन पर उसने अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से प्रकट की है।

इसलिए, उसने राष्ट्रों को नूह के आदेश के उल्लंघन के लिए ज़िम्मेदार ठहराया, लेकिन मूसा की व्यवस्था के ज़रिए, उसने खुद को अपने लोगों के सामने और भी स्पष्ट रूप से प्रकट किया है । उन्हें बेहतर जानना चाहिए। इसलिए, वह अपने लोगों पर एक ऊँचे नैतिक मानदंड रखता है, जिन पर उसने अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से प्रकट की है।

और मैं इसे थोड़ा और विस्तार से समझना चाहता हूँ। इससे पहले कि हम अपने आस-पास के बुतपरस्त संसार पर जल्दबाज़ी में उंगली उठाएँ, हमें पहले अपने जीवन की जाँच करनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम यीशु मसीह में अपने उच्च बुलावे के योग्य चल रहे हैं। याद रखें, इफिसियों में पौलुस हमें कहते हैं, "अपनी बुलाहट के योग्य चलो।"

हमारे पाप शायद विधर्मियों जितने बुरे न लगें, लेकिन परमेश्वर की नज़र में, वे और भी बुरे हो सकते हैं, क्योंकि हमें बेहतर जानना चाहिए। तो, जब आप सूची में वापस जाते हैं और सोचते हैं कि विधर्मी क्या करते थे, है ना? लोगों को पीटना, मानो दास व्यापार, लोगों का अपहरण करके उन्हें गुलामी में बेचना, संधियाँ तोड़ना, गर्भवती महिलाओं का चीर-फाड़ करना। यह भयानक है।

ये बुतपरस्त दुनिया है। देखो, ये कितने भयानक और दुष्ट हैं। लेकिन हाँ, प्रभु इनसे निपटेगा।

वे बच तो नहीं पाएँगे, लेकिन उन्होंने उनके सभी अपराधों का विस्तार से ज़िक्र नहीं किया है। देखिए, मुझे लगता है कि उन्होंने इस तरह का एक नमूना दिया है, शायद सूची में आखिरी वाला

शायद उनका सबसे बुरा काम हो, लेकिन वे और भी कुछ कर रहे होंगे। लेकिन अब वह इस बात पर आते हैं कि, वह यहूदा आए और उन्होंने कानून तोड़ा और वे मूर्तिपूजक थे, और इस्राएल भी वैसा ही था।

और ये शायद उतना बुरा न लगे। वो लोग मार्सेइक भोज में जा रहे हैं। अरे, इन लोगों पर कर्ज़ है।

उन्होंने कर्ज़ लिया था। वे उसे चुका नहीं पाए । मुझे पूरा हक़ है कि मैं उनकी गिरवी रखी हुई हर चीज़ पर दावा करूँ।

का अधिकार है, कानूनी अधिकार। उनके संदर्भ में, वे इसे कानूनी मानते। हम मार्सेइक जाते हैं ।

हाँ, अगर वे पैसे नहीं देते, तो हमें उनके कपड़े और उनकी शराब छीन लेने का हक़ है। और फिर नबियों और नाज़रियों का अनादर। वे ऐसा कर सकते हैं, आह, वे कट्टरपंथी हैं।

तुम्हें पता है, वे पागल लोग हैं। पैगम्बर, वे चले जाते हैं और वे बस एक तरह के पागल लोग हैं। और नाज़ीर, तुम्हें पता है, इतने अतिवादी नहीं होते।

तो, अगर आप इस समय एक इस्राएली हैं, तो आप इन सब बातों को इतना बुरा नहीं मान सकते। लेकिन प्रभु की नज़र में, ये सचमुच बुरी हैं। और इसलिए हम ऐसा करते हैं।

और मुझे लगता है कि हमारे आस-पास की दुनिया के अंधकार और पाप को उजागर करना सही है। मुझे लगता है कि परमेश्वर ने हमें दुनिया में ज्योति बनने के लिए बुलाया है। और मुझे लगता है कि पौलुस और पतरस इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ज्योति बनकर चमकना हमारी ज़िम्मेदारी है।

और जब हम ऐसा करेंगे, तो लोग नाराज़ हो जाएँगे। हम कहेंगे, मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं किसी बच्चे को नहीं मारूँगा।

मैं इसमें शामिल नहीं होने वाला। खैर, चलिए तुरंत ही बातों को जोड़ते हैं। आप निंदा कर रहे हैं।

आप ऐसा करने वालों की निंदा कर रहे हैं। और आप असल में कह रहे हैं कि आप एक हत्यारे हैं। मैं हत्या नहीं करूँगा।

ठीक है। सच कहो, सच कहो। मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि इसमें कुछ भी ग़लत नहीं है।

लेकिन यह तब ग़लत हो जाता है जब हम खुद को धर्मी समझने लगते हैं। और हम खुद पर गौर करके यह नहीं पूछते कि क्या हम परमेश्वर के प्रति वफ़ादार हैं? परमेश्वर हमसे कुछ खास चीज़ें चाहता है। हम कभी भी वह नहीं करेंगे जो अन्यजाति कर रहे हैं।

लेकिन हम बेहतर जानते हैं। हमारे पास ज़्यादा रोशनी है। कुछ बुतपरस्तों के पास ईश्वर की रोशनी नहीं है।

यह हमारा काम है कि हम उन्हें बताएँ कि परमेश्वर के मानक क्या हैं और उन्हें पश्चाताप के लिए प्रेरित करें। लेकिन साथ ही, हो सकता है कि मैं कुछ ऐसा कर रहा हूँ जो परमेश्वर की नज़र में बुरा है, क्योंकि मुझे बेहतर जानकारी होनी चाहिए। और मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

तो, मैं इसे दोहराऊँगा। परमेश्वर अपने लोगों पर, जिन पर उसने अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से प्रकट की है, एक ऊँचे नैतिक मानदंड रखता है। तो यह विचारणीय बात है।

और जैसे ही हम अगले भाग में प्रवेश करते हैं, मैंने पहले दो अध्यायों का शीर्षक रखा है, "एक भविष्यवक्ता अपने श्रोताओं को फँसाता है"। लेकिन ये दोनों अध्याय आपस में जुड़े हुए हैं। अगले भाग, जिसमें अध्याय तीन से छह शामिल होंगे, का शीर्षक मैंने रखा है "मुक्ति का इतिहास उजागर होता है।"

और मैं इसे आगे बढ़ते हुए समझाता रहूँगा। उद्धार का इतिहास मूलतः इस बात का इतिहास है कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से बचाया, उन्हें जंगल से होते हुए निर्वासन से निकालकर, उस देश में लाया, उन्हें एक ज़मीन दी। और दुर्भाग्य से, भविष्यवक्ताओं का कहना है कि क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन किया है, इसलिए उद्धार का इतिहास उलट जाएगा । वे वापस गुलामी में, निर्वासन में चले जाएँगे।

तो यही तो मेरे मन में है, और जैसे-जैसे हम इन अध्यायों को पढ़ेंगे, आप इस विषय को विकसित होते देखेंगे। लेकिन पहले दो पदों में, एक उपश्रेणी के रूप में, मैं उन्हें बुलाता हूँ जिन्हें बहुत कुछ दिया गया है, जिनसे बहुत कुछ अपेक्षित है। और यह वास्तव में अभी कही गई बात से संबंधित है।

इस खंड में दी गई हर बात अध्याय 2, श्लोक 6 से 16 में कही गई बातों का समर्थन करेगी। इसलिए कभी-कभी हमारी रूपरेखाएँ थोड़ी मनमानी होती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि ज़ोर देने में अंतर है। लेकिन यहीं शुरुआत में, जो कहा गया है, उससे एक स्पष्ट संबंध है।

दरअसल, आप अध्याय 3, श्लोक 2 के बाद अध्याय विभाजन रख सकते थे। लेकिन आइए उन श्लोकों, श्लोक 1 और 2 को पढ़ें, और मुझे लगता है कि आपको संबंध समझ आ जाएगा। तो, इस्राएल पर न्याय आ रहा है, लेकिन एक औपचारिक परिचय है। हे इस्राएल के लोगों, यह वचन सुनो, यह वचन जो यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध कहा है।

तो, यह उस न्याय-भाषण का परिचय है जो हमने अभी पढ़ा है, उस पूरे परिवार, पूरे कुल के विरुद्ध जो मैं मिस्र से बाहर लाया हूँ। तो, यह संदेश उन सभी के लिए है जो मिस्र से बाहर लाए गए हैं, और इसमें यहूदा भी शामिल है। याद रखें, यहूदा भी शामिल था।

आमोस घर वापस जा रहा है और शायद, अब चूँकि वह एक तरह से भविष्यवक्ता है, वह शायद इनमें से कुछ बातें दोहराएगा और इसे यहूदा के लोगों पर लागू करेगा। और मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हम इस वृत्तांत को पढ़ते हैं, हम इसमें से कुछ बातें देखते हैं। लेकिन ध्यान दीजिए कि

अध्याय 3, पद 2 में प्रभु क्या कहते हैं। केवल तुम, और वह इब्रानी में केवल शब्द का प्रयोग करता है।

दरअसल, वह इसे सबसे पहले चट्टान कहता है । मैंने सिर्फ़ तुम्हें ही जाना है, यही इब्रानी भाषा में शब्दों का क्रम है, और वह इब्रानी क्रिया यदा का इस्तेमाल करता है, जिसका अर्थ है जानना। इसलिए पृथ्वी के सभी कुलों में से मैंने सिर्फ़ तुम्हें ही जाना है।

अरे, अरे, चलो धीरे चलें। परमेश्वर सभी राष्ट्रों को जानता था। वह सभी राष्ट्रों से अवगत था।

वह कोई अलग-थलग परमेश्वर नहीं है जो सिर्फ़ अपने वाचा के लोगों के साथ व्यवहार करता है। परमेश्वर सभी राष्ट्रों के बारे में जानता है। इसलिए क्रिया यदा, जिसका हम अनुवाद जानना या पहचानना, जैसे कुछ करना पसंद करते हैं, समस्याग्रस्त है।

यह अनुवाद समस्याग्रस्त है। और अक्सर हिब्रू में, जब हम हिब्रू शब्द का अध्ययन करते हैं, तो हमें पता चलता है कि उसके अर्थ अंग्रेज़ी में समझे जाने वाले अर्थ से कहीं ज़्यादा हैं। और कभी-कभी, अर्थ के आधार पर, हम एक अलग अंग्रेज़ी क्रिया का उपयोग करना चाह सकते हैं।

मुझे नहीं लगता कि यहाँ " जानना" सबसे अच्छा अनुवाद है। यह " जानना " का अर्थ है , " पहचानना" का एक विशेष स्थान है, और इसीलिए NIV ने इसका अनुवाद "चुना हुआ" के रूप में किया है, और मुझे लगता है कि "यादा" के प्रयोग की यही सटीक व्याख्या है। और इसलिए "केवल तुम्हें मैंने जाना है" का अर्थ है, "मैंने तुम्हें केवल एक विशेष रूप से पहचाना है।"

मैंने तुम्हें एक खास तरीके से अपनी वाचा के लोगों के रूप में जाना है। नूह के ज़रिए जो मैंने आदेश दिया था, जो मैंने तुम्हें दिया था, उससे भी बढ़कर, मैंने तुम्हें एक खास तरीके से चुना है। मैंने तुम्हें मूसा की व्यवस्था दी है।

और इस तरह हमारा रिश्ता दूसरे देशों के साथ मेरे रिश्ते से कहीं बढ़कर है। मैंने सिर्फ़ तुम्हें ही चुना है। पृथ्वी के सभी परिवारों में से तुम ही मेरे चुने हुए लोग हो।

और हम "जानना" का यह प्रयोग अन्यत्र भी देखते हैं। इसका प्रयोग परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को जानने के लिए भी किया जा सकता है। इसका प्रयोग लोगों द्वारा परमेश्वर को जानने के लिए भी किया जा सकता है।

पहले शमूएल 2 के बारे में सोचिए, एली के पुत्रों के बारे में, और वहाँ लिखा है कि वे प्रभु को नहीं जानते थे। है ना? वे प्रभु को जानते हैं। हे प्रभु, वे अपने पिता एली के अधीन उसके पवित्रस्थान में काम करते हैं, और प्रभु को बलिदान चढ़ाते हैं।

वे पवित्रस्थान में सेवा करते हैं। वे यहोवा को जानते हैं। होप्नी और पीनहास यहोवा को जानते हैं।

तो जब यह पाठ कहता है कि वे प्रभु को नहीं जानते, तो इसका क्या अर्थ है? इसका मतलब है कि वे प्रभु को अपने ऊपर अधिकार रखने वाले के रूप में नहीं पहचानते। वे इसे पहचानते नहीं और

उसके अनुसार कार्य नहीं करते। सकारात्मक पक्ष पर, यदि आप यिर्मयाह 22 पर जाएँ, तो यह योशिय्याह के बारे में बात कर रहा है, और जो हुआ है, वह यह है कि यहूदा के राजा ने उन लोगों को छोड़ दिया जो गुलाम थे, और अब वह उन्हें फिर से गुलाम बना रहा है।

और प्रभु इस बात से नाराज़ हैं, क्योंकि यह न्यायसंगत नहीं था। इसलिए वे योशिय्याह, राजा योशिय्याह को याद करते हैं, जिनके बारे में हम जानते हैं कि वे एक धर्मी राजा थे। क्या आपको राजा योशिय्याह याद हैं? यह देश के इतिहास में बहुत कम और बहुत देर से हुआ, लेकिन योशिय्याह एक धर्मी राजा थे।

और इसी वजह से प्रभु ने अपने लोगों का न्याय स्थगित कर दिया। और वह कहता है कि वह उम्मीद करता है कि लोग उसे जानें, और योशिय्याह मूलतः न्याय के बारे में चिंतित था, और वह विधवा और अनाथ के बारे में भी चिंतित था। और उसने ऐसी नीतियाँ बनाईं जो उनके लाभ के लिए बनाई गई थीं, और वह न्याय का समर्थक था, और विधवा और अनाथ का भी समर्थक था।

और आप जानते हैं कि पुराने नियम में विधवा और अनाथ, कमज़ोर लोगों के प्रतीक हैं। उस संस्कृति में उन्होंने कमाने वाले को खो दिया है, और आपको बहुत ही नाजुक स्थिति में डाल देता है । नाओमी और रूथ के बारे में सोचिए।

और इसलिए योशिय्याह उन लोगों के बारे में चिंतित था। और दिलचस्प बात यह है कि प्राचीन निकट पूर्व में, राजाओं को विधवाओं और अनाथों की चिंता करनी चाहिए थी। यह बात सिर्फ़ बाइबल में ही नहीं है।

वे हमेशा से ऐसा नहीं करते थे, खासकर जब वे लालची थे और उन्होंने ये बड़ी शाही नौकरशाही बनाई थी, लेकिन संस्कृति में राजत्व के आदर्श में , आपको विधवाओं और अनाथों की देखभाल करनी होती है। और प्रभु कहते हैं, योशिय्याह ने यही किया। और फिर उसने एक आलंकारिक प्रश्न पूछा, " क्या मुझे जानने का यही अर्थ नहीं है ?" तो योशिय्याह ने प्रभु को कैसे जाना? यह सिर्फ़ जागरूकता नहीं थी।

यह प्रभु के प्रति एक प्रतिबद्धता थी। यह प्रभु के अधिकार की स्वीकृति थी, और प्रभु ने जो करने के लिए कहा था, उसे करने की प्रतिबद्धता थी। और इसलिए उस स्थिति में प्रभु को जानना आज्ञाकारिता द्वारा प्रदर्शित निष्ठा है।

तो आप देख सकते हैं कि "जानना" हमेशा सिर्फ़ मानसिक जागरूकता से जुड़ा नहीं होता। और यहाँ यह एक अलग तरीके से काम कर रहा है। सिर्फ़ आप ही "मैं" जानते हैं।

दूसरे शब्दों में, मैंने सिर्फ़ तुम्हें ही एक ख़ास रिश्ते के रूप में पहचाना है। मैंने तुम्हें एक ख़ास तरीक़े से अपने अधिकार के अधीन माना है, और मैंने तुम्हें तुम्हारे जीवन जीने के तरीक़े का मार्गदर्शन करने के लिए वाचा दी है। और इसीलिए, और यह इब्रानी में है, अल- क़ोयिम , इसलिए, यहाँ एक तार्किक संबंध है।

मैंने सिर्फ़ तुम्हें ही एक ख़ास तरीक़े से जाना है, चुना है। पृथ्वी के सभी कुलों में से, तुम मेरे चुने हुए लोग हो। इसलिए, मैं सचमुच तुम्हारे सारे अधर्म का दण्ड तुम्हें दूँगा।

और वह भेंट एक इब्रानी मुहावरा है जिसका सबसे अच्छा अनुवाद है, दंड देना। मैं दण्ड दूँगा, मैं तुम्हारे सभी अधर्मों का न्याय करूँगा—पाप के लिए यहाँ अलग शब्द है, एवन , तुम्हारे सभी पाप।

तो तर्क देखिए, और यह अध्याय 2 से ही उभर कर आता है। इसलिए अगर कोई कह रहा है, "मुझे नहीं लगता कि इस्राएली जो कर रहे हैं वह अन्यजातियों के कामों के आस-पास भी है," तो इस बिंदु पर प्रभु का यही उत्तर है। मैंने तुम्हें अपना विशेष जन बनाया है। मैं तुमसे और भी ज़्यादा की अपेक्षा करता हूँ।

जिसे बहुत कुछ दिया जाता है, उससे बहुत कुछ अपेक्षित होता है। और यही इन आयतों के लिए मेरा सिद्धांत है। जिसे बहुत कुछ दिया जाता है, उससे बहुत कुछ अपेक्षित होता है।

और हम इसे थोड़ा और विस्तार से समझ सकते हैं। इस सिद्धांत का पहला भाग इफिसियों की कलीसिया को दिए गए पौलुस के उपदेश के मूल में है। इफिसियों को यह याद दिलाने के बाद कि परमेश्वर ने उन्हें अपनी सर्वोच्चता से अपने लोगों के रूप में चुना है, पौलुस उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, कि जो बुलावा तुम्हें मिला है, उसके योग्य जीवन जिएँ।

और फिर मुझे लगता है कि इस सिद्धांत का दूसरा भाग प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में कलीसियाओं को लिखे पत्रों में काम करता हुआ दिखाई देता है, जहाँ यीशु उनके पास आते हैं। और वे यीशु से दिल खोलकर बात करते हैं, और यीशु उनके बुलावे पर खरा न उतरने की उनकी नाकामी को उजागर करते हैं। और यीशु उन्हें उनकी दीवट खो देने और सज़ा देने की धमकी देते हैं।

और इसलिए नए नियम के युग में भी, हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम परमेश्वर द्वारा बुलाए गए कार्य के अनुसार आचरण करें और उसके अनुसार कार्य करें। इसलिए मुझे लगता है कि हम यहीं रुकेंगे और इस भाग पर अपनी चर्चा जारी रखेंगे, ताकि एक झलक मिल सके कि हम अपनी रूपरेखा में कहाँ जा रहे हैं। जैसे-जैसे हम अध्याय 3 में आगे बढ़ेंगे, मैं यहाँ आपकी रुचि जगाने और आपकी जिज्ञासा बढ़ाने का प्रयास करूँगा।

अध्याय 3, पद 3 से 8 तक, हर प्रभाव का एक कारण होता है। भविष्यवक्ता इस बात पर ज़ोर देंगे और फिर उसे थोड़ा और विस्तार से समझाएँगे। और फिर अध्याय 3, पद 9 से 15 तक, इन लोगों को किसने आमंत्रित किया? और आपको पता चलेगा कि प्रभु सामरिया और उत्तरी राज्य में क्या हो रहा है, यह देखने के लिए किसे आमंत्रित कर रहे हैं।

इन लोगों को किसने बुलाया? और फिर जैसे ही हम अध्याय 4, पद 1 से 3 में आगे बढ़ते हैं, वह बाशान की मादा गायों के बारे में बात करेंगे। ये गायें इतनी मोटी क्यों हैं? तो अगले सत्र में आगे बढ़ते हुए और इन पर विस्तार से चर्चा करते हुए, हम इसी पर चर्चा करेंगे और देखेंगे कि उद्धार का इतिहास कैसे सामने आता है। यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म आमोस की पुस्तक पर अपनी शिक्षा में कह रहे हैं।

आमोस, सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा? सत्र 2 (बी), एक भविष्यवक्ता अपने श्रोताओं को फँसाता है—आमोस 1:1-2:16.